



# Gudiya

22 Apr 2024

09:06 AM

Rewari

Model: Web-MyKundli

Order No: 121057501

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 22/04/2024  
दिन \_\_\_\_\_: सोमवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 09:06:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 08:06:15 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Rewari  
राज्य \_\_\_\_\_: Haryana  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 28:11:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 76:37:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:23:32 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 08:42:28 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:01:33 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 22:45:14 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:51:29 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:52:57 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 13:01:28 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: ग्रीष्म  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 08:18:34 मेष  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 00:55:24 मिथुन

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मिथुन - बुध  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: कन्या - बुध  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: हस्त - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: चन्द्र  
योग \_\_\_\_\_: हर्षण  
करण \_\_\_\_\_: गर  
गण \_\_\_\_\_: देव  
योनि \_\_\_\_\_: महिष  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: वैश्य  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: श्वान  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: भूमि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: ण--  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: वृष

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1946	वैशाख	2
पंजाबी	संवत : 2081	वैशाख	10
बंगाली	सन् : 1431	वैशाख	9
तमिल	संवत : 2081	चिथिराई	9
केरल	कोल्लम : 1199	मेदम	9
नेपाली	संवत : 2081	वैशाख	10
चैत्रादि	संवत : 2081	चैत्र	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2081	चैत्र	शुक्ल 14

### पंचांग

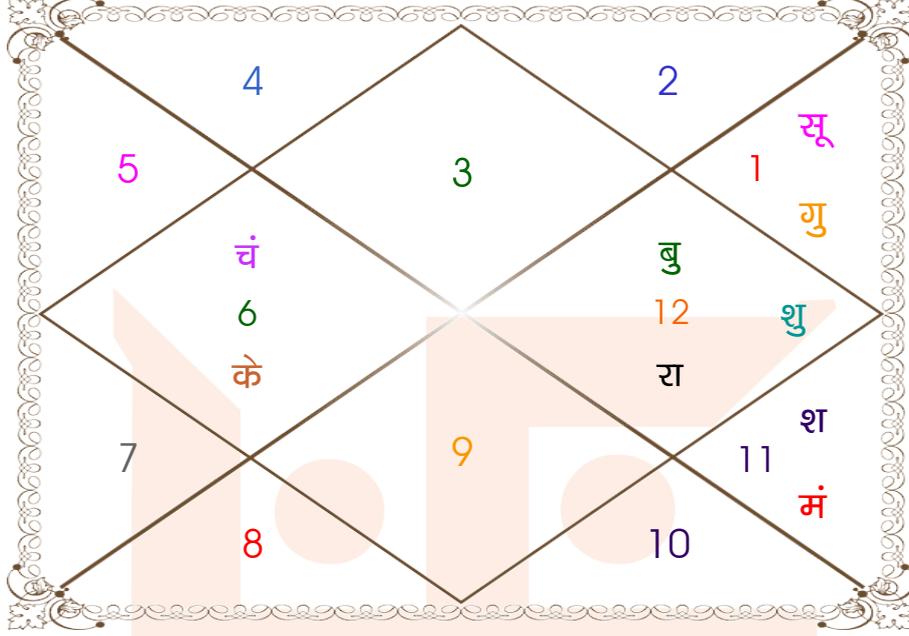
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 14  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 27:25:59  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 14  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : हस्त  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 19:59:29 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : हस्त  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : हर्षण  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 28:27:52 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : हर्षण  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : गर  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:21:13 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : गर  
भयात \_\_\_\_\_ : 39:54:56  
भभोग \_\_\_\_\_ : 67:08:38  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : चंद्र 4 वर्ष 0 मा 24 दि

### घात चक्र

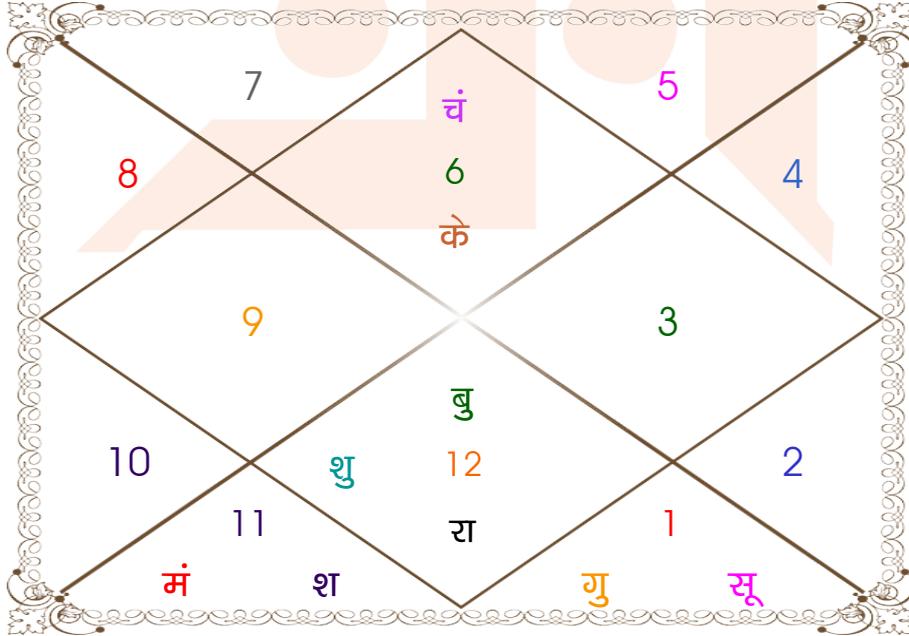
मास \_\_\_\_\_ : भाद्रपद  
तिथि \_\_\_\_\_ : 5-10-15  
दिन \_\_\_\_\_ : शनिवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : श्रवण  
योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मेष  
लग्न \_\_\_\_\_ : मीन  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मेष  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
मंगल \_\_\_\_\_ : वृष  
बुध \_\_\_\_\_ : मीन  
गुरु \_\_\_\_\_ : मिथुन  
शुक्र \_\_\_\_\_ : कर्क  
शनि \_\_\_\_\_ : मीन  
राहु \_\_\_\_\_ : सिंह

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



Shiv Kripa Jyotish Sansthan

Lucknow

7007416695

shivkripajyotishsansthan@gmail.com

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुण्डली

रा बु शु	गु सू		ल
श मं			
			के चं

## लग्न कुण्डली

	गु सू	शु बु	रा
ल			श मं
चं के			

विंशोत्तरी  
चन्द्र 4वर्ष 0मा 24दि  
चन्द्र

22/04/2024

18/05/2138

चन्द्र	17/05/2028
मंगल	17/05/2035
राहु	17/05/2053
गुरु	17/05/2069
शनि	17/05/2088
बुध	18/05/2105
केतु	18/05/2112
शुक्र	18/05/2132
सूर्य	18/05/2138

योगिनी  
संकटा 3वर्ष 3मा 1दि  
संकटा

22/04/2024

24/07/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	22/04/2024
भद्रिका	02/09/2024
उल्का	02/01/2026
सिद्धा	24/07/2027

Shiv Kripa Jyotish Sansthan

Lucknow

7007416695

shivkripajyotishsansthan@gmail.com

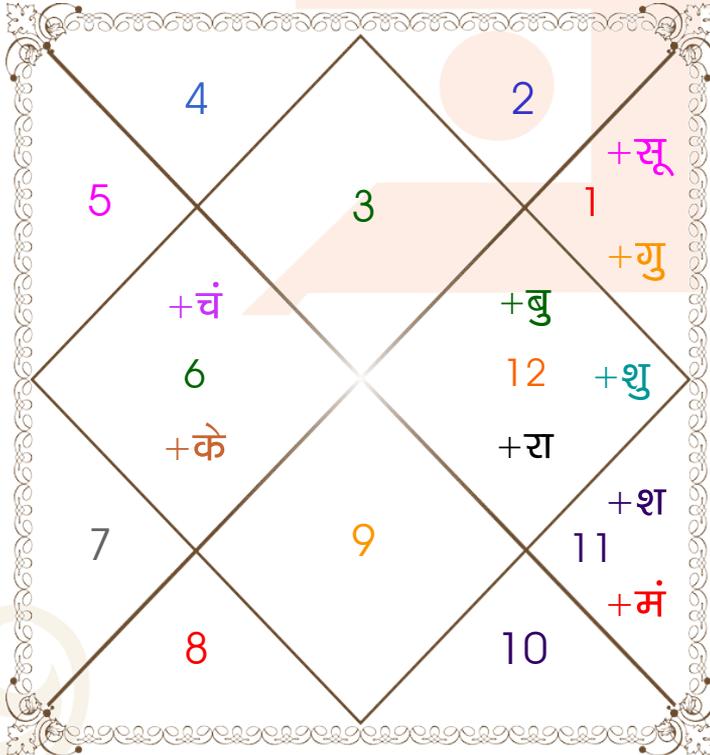
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	00:55:24	338:51:35	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	---
सूर्य			मेष	08:18:34	00:58:30	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	उच्च राशि
चंद्र			कन्या	17:54:35	11:55:27	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	मित्र राशि
मंगल			कुंभ	29:14:28	00:46:26	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	सूर्य	सम राशि
बुध	व	अ	मीन	22:15:51	00:16:53	रेवती	2	27	गुरु	बुध	चंद्र	नीच राशि
गुरु			मेष	27:52:33	00:13:48	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि
शुक्र			मीन	26:46:13	01:13:59	रेवती	4	27	गुरु	बुध	गुरु	उच्च राशि
शनि			कुंभ	21:37:43	00:05:47	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	स्वराशि
राहु			मीन	21:27:25	00:00:16	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	सम राशि
केतु			कन्या	21:27:25	00:00:16	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष			मेष	27:41:35	00:03:20	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	---
नेप			मीन	04:27:22	00:01:58	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	---
प्लूटो			मक	07:52:55	00:00:18	उत्तराषाढा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
दशम भाव			कुंभ	15:33:49	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	शुक्र	--

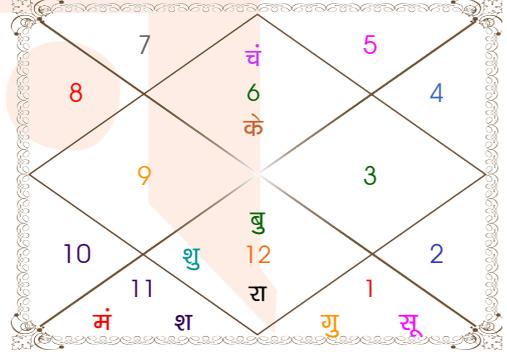
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:11:42

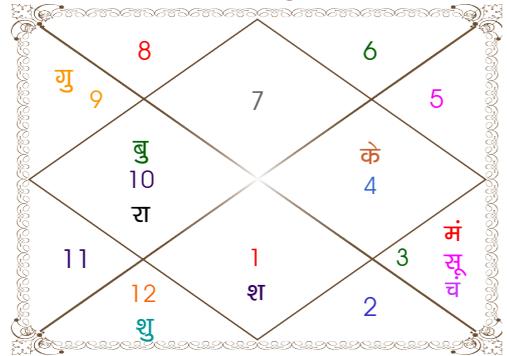
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



Shiv Kripa Jyotish Sansthan

Lucknow

7007416695

shivkripajyotishsansthan@gmail.com

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 13:21:48	मिथुन 00:55:24
2	मिथुन 13:21:48	मिथुन 25:48:12
3	कर्क 08:14:36	कर्क 20:41:01
4	सिंह 03:07:25	सिंह 15:33:49
5	कन्या 03:07:25	कन्या 20:41:01
6	तुला 08:14:36	तुला 25:48:12
7	वृश्चिक 13:21:48	धनु 00:55:24
8	धनु 13:21:48	धनु 25:48:12
9	मकर 08:14:36	मकर 20:41:01
10	कुम्भ 03:07:25	कुम्भ 15:33:49
11	मीन 03:07:25	मीन 20:41:01
12	मेष 08:14:36	मेष 25:48:12

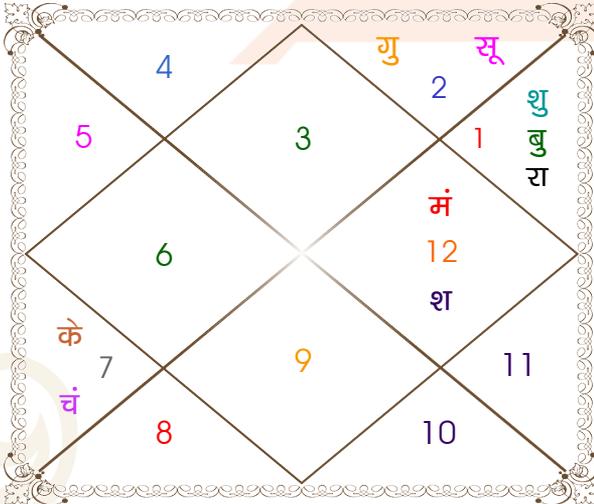
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	00:55:24
2	मिथुन	24:01:03
3	कर्क	17:49:52
4	सिंह	15:33:49
5	कन्या	19:07:09
6	तुला	26:10:24
7	धनु	00:55:24
8	धनु	24:01:03
9	मकर	17:49:52
10	कुम्भ	15:33:49
11	मीन	19:07:09
12	मेष	26:10:24

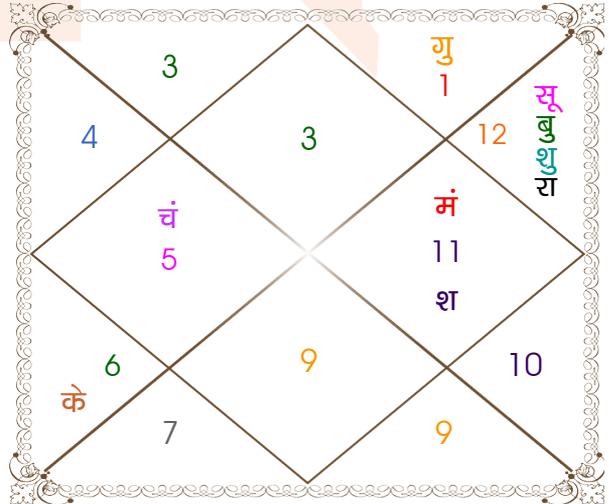
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



Shiv Kripa Jyotish Sansthan

Lucknow

7007416695

shivkripajyotishsansthan@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 4 वर्ष 0 मास 24 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
22/04/2024	17/05/2028	17/05/2035	17/05/2053	17/05/2069
17/05/2028	17/05/2035	17/05/2053	17/05/2069	17/05/2088
00/00/0000	मंगल 13/10/2028	राहु 28/01/2038	गुरु 05/07/2055	शनि 20/05/2072
00/00/0000	राहु 31/10/2029	गुरु 22/06/2040	शनि 15/01/2058	बुध 28/01/2075
00/00/0000	गुरु 07/10/2030	शनि 29/04/2043	बुध 22/04/2060	केतु 08/03/2076
00/00/0000	शनि 16/11/2031	बुध 15/11/2045	केतु 29/03/2061	शुक्र 08/05/2079
22/04/2024	बुध 12/11/2032	केतु 04/12/2046	शुक्र 28/11/2063	सूर्य 19/04/2080
बुध 16/08/2025	केतु 10/04/2033	शुक्र 04/12/2049	सूर्य 15/09/2064	चंद्र 18/11/2081
केतु 17/03/2026	शुक्र 10/06/2034	सूर्य 28/10/2050	चंद्र 15/01/2066	मंगल 28/12/2082
शुक्र 16/11/2027	सूर्य 16/10/2034	चंद्र 28/04/2052	मंगल 22/12/2066	राहु 03/11/2085
सूर्य 17/05/2028	चंद्र 17/05/2035	मंगल 17/05/2053	राहु 17/05/2069	गुरु 17/05/2088

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
17/05/2088	18/05/2105	18/05/2112	18/05/2132	18/05/2138
18/05/2105	18/05/2112	18/05/2132	18/05/2138	00/00/0000
बुध 13/10/2090	केतु 14/10/2105	शुक्र 17/09/2115	सूर्य 04/09/2132	चंद्र 18/03/2139
केतु 10/10/2091	शुक्र 14/12/2106	सूर्य 16/09/2116	चंद्र 06/03/2133	मंगल 18/10/2139
शुक्र 10/08/2094	सूर्य 21/04/2107	चंद्र 18/05/2118	मंगल 12/07/2133	राहु 17/04/2141
सूर्य 17/06/2095	चंद्र 20/11/2107	मंगल 18/07/2119	राहु 05/06/2134	गुरु 17/08/2142
चंद्र 15/11/2096	मंगल 17/04/2108	राहु 18/07/2122	गुरु 25/03/2135	शनि 18/03/2144
मंगल 12/11/2097	राहु 06/05/2109	गुरु 18/03/2125	शनि 06/03/2136	बुध 23/04/2144
राहु 02/06/2100	गुरु 12/04/2110	शनि 18/05/2128	बुध 10/01/2137	00/00/0000
गुरु 08/09/2102	शनि 21/05/2111	बुध 18/03/2131	केतु 18/05/2137	00/00/0000
शनि 18/05/2105	बुध 18/05/2112	केतु 18/05/2132	शुक्र 18/05/2138	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 4 वर्ष 0 मा 20 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>चंद्र - केतु</b> 16/08/2025 17/03/2026	<b>चंद्र - शुक्र</b> 17/03/2026 16/11/2027	<b>चंद्र - सूर्य</b> 16/11/2027 17/05/2028	<b>मंगल - मंगल</b> 17/05/2028 13/10/2028	<b>मंगल - राहु</b> 13/10/2028 31/10/2029
केतु 29/08/2025 शुक्र 03/10/2025 सूर्य 14/10/2025 चंद्र 31/10/2025 मंगल 13/11/2025 राहु 15/12/2025 गुरु 12/01/2026 शनि 15/02/2026 बुध 17/03/2026	शुक्र 27/06/2026 सूर्य 27/07/2026 चंद्र 16/09/2026 मंगल 21/10/2026 राहु 21/01/2027 गुरु 12/04/2027 शनि 17/07/2027 बुध 11/10/2027 केतु 16/11/2027	सूर्य 25/11/2027 चंद्र 10/12/2027 मंगल 21/12/2027 राहु 17/01/2028 गुरु 11/02/2028 शनि 11/03/2028 बुध 05/04/2028 केतु 16/04/2028 शुक्र 17/05/2028	मंगल 25/05/2028 राहु 17/06/2028 गुरु 07/07/2028 शनि 30/07/2028 बुध 20/08/2028 केतु 29/08/2028 शुक्र 23/09/2028 सूर्य 30/09/2028 चंद्र 13/10/2028	राहु 09/12/2028 गुरु 29/01/2029 शनि 31/03/2029 बुध 24/05/2029 केतु 16/06/2029 शुक्र 19/08/2029 सूर्य 07/09/2029 चंद्र 09/10/2029 मंगल 31/10/2029
<b>मंगल - गुरु</b> 31/10/2029 07/10/2030	<b>मंगल - शनि</b> 07/10/2030 16/11/2031	<b>मंगल - बुध</b> 16/11/2031 12/11/2032	<b>मंगल - केतु</b> 12/11/2032 10/04/2033	<b>मंगल - शुक्र</b> 10/04/2033 10/06/2034
गुरु 16/12/2029 शनि 08/02/2030 बुध 28/03/2030 केतु 17/04/2030 शुक्र 13/06/2030 सूर्य 30/06/2030 चंद्र 28/07/2030 मंगल 17/08/2030 राहु 07/10/2030	शनि 10/12/2030 बुध 06/02/2031 केतु 01/03/2031 शुक्र 08/05/2031 सूर्य 28/05/2031 चंद्र 01/07/2031 मंगल 24/07/2031 राहु 23/09/2031 गुरु 16/11/2031	बुध 06/01/2032 केतु 27/01/2032 शुक्र 28/03/2032 सूर्य 15/04/2032 चंद्र 15/05/2032 मंगल 05/06/2032 राहु 30/07/2032 गुरु 16/09/2032 शनि 12/11/2032	केतु 21/11/2032 शुक्र 16/12/2032 सूर्य 23/12/2032 चंद्र 05/01/2033 मंगल 13/01/2033 राहु 05/02/2033 गुरु 25/02/2033 शनि 20/03/2033 बुध 10/04/2033	शुक्र 20/06/2033 सूर्य 12/07/2033 चंद्र 16/08/2033 मंगल 10/09/2033 राहु 13/11/2033 गुरु 09/01/2034 शनि 17/03/2034 बुध 17/05/2034 केतु 10/06/2034
<b>मंगल - सूर्य</b> 10/06/2034 16/10/2034	<b>मंगल - चंद्र</b> 16/10/2034 17/05/2035	<b>राहु - राहु</b> 17/05/2035 28/01/2038	<b>राहु - गुरु</b> 28/01/2038 22/06/2040	<b>राहु - शनि</b> 22/06/2040 29/04/2043
सूर्य 17/06/2034 चंद्र 27/06/2034 मंगल 05/07/2034 राहु 24/07/2034 गुरु 10/08/2034 शनि 30/08/2034 बुध 18/09/2034 केतु 25/09/2034 शुक्र 16/10/2034	चंद्र 03/11/2034 मंगल 15/11/2034 राहु 17/12/2034 गुरु 15/01/2035 शनि 18/02/2035 बुध 20/03/2035 केतु 01/04/2035 शुक्र 07/05/2035 सूर्य 17/05/2035	राहु 12/10/2035 गुरु 21/02/2036 शनि 26/07/2036 बुध 13/12/2036 केतु 08/02/2037 शुक्र 22/07/2037 सूर्य 10/09/2037 चंद्र 01/12/2037 मंगल 28/01/2038	गुरु 24/05/2038 शनि 10/10/2038 बुध 11/02/2039 केतु 03/04/2039 शुक्र 28/08/2039 सूर्य 10/10/2039 चंद्र 22/12/2039 मंगल 12/02/2040 राहु 22/06/2040	शनि 04/12/2040 बुध 30/04/2041 केतु 30/06/2041 शुक्र 21/12/2041 सूर्य 11/02/2042 चंद्र 08/05/2042 मंगल 08/07/2042 राहु 11/12/2042 गुरु 29/04/2043

Shiv Kripa Jyotish Sansthan

Lucknow

7007416695

shivkripajyotishsansthan@gmail.com

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

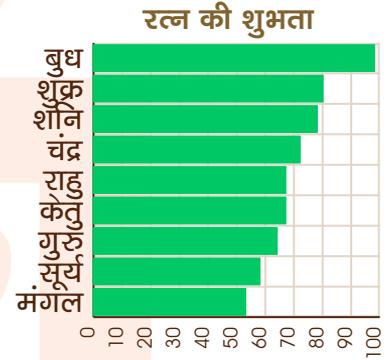
मूलांक	4
भाग्यांक	7
मित्र अंक	1, 4, 6, 7
शत्रु अंक	3, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	98%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, सुख
हीरा	शुक्र	80%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च, सन्तति सुख
नीलम	शनि	78%	भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	72%	सुख, धन
गोमेद	राहु	67%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
लहसुनिया	केतु	67%	सुख, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	64%	धनार्जन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	58%	धनार्जन, पराक्रम
मूंगा	मंगल	53%	भाग्योदय, धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	17/05/2028	64%	84%	53%	100%	64%	80%	78%	55%	55%
मंगल	17/05/2035	64%	78%	66%	86%	70%	80%	78%	55%	73%
राहु	17/05/2053	41%	59%	31%	98%	64%	86%	84%	80%	55%
गुरु	17/05/2069	64%	78%	59%	86%	77%	67%	78%	67%	67%
शनि	17/05/2088	41%	59%	31%	100%	64%	86%	90%	73%	55%
बुध	18/05/2105	64%	59%	53%	100%	64%	86%	78%	67%	67%
केतु	18/05/2112	41%	59%	59%	98%	64%	86%	65%	55%	80%
शुक्र	18/05/2132	41%	59%	53%	100%	64%	92%	84%	73%	73%
सूर्य	18/05/2138	70%	78%	59%	98%	70%	67%	65%	55%	55%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----

### द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----

### तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/10/2097-02/05/2098	20/06/2098-26/12/2099	17/03/2100-16/09/2100
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/12/2099-17/03/2100	16/09/2100-03/12/2102	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	अल्प बचत
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	सुख
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति

Shiv Kripa Jyotish Sansthan

Lucknow

7007416695

shivkripajyotishsansthan@gmail.com

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगी तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगी। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्योदय नहीं होता। अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा हमेशा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगी। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा भी आप कम ही सम्पन्न करेंगी। आयु के साथ साथ जीवन में भाग्य एवं धर्म के महत्व को भी स्वीकार करेंगी। समाज में आपको विशिष्ट सम्मान की प्राप्ति की संभावना भी रहेगी। आप उत्साह एवं पराक्रम से अपने कार्यों को सम्पन्न करने में सर्वदा तत्पर रहेंगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अधिक मात्रा में व्यय करेंगी तथा यह व्यय शुभाशुभ दोनों प्रकार से होगा। साथ ही जमीन जायदाद आदि पर आप अधिक से अधिक व्यय करना पसन्द करेंगी तथा इसमें आपको प्रचुर मात्रा में लाभ भी होगा। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। दाम्पत्य जीवन का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी। समाज में सभी लोग आपके प्रभाव एवं पराक्रम को स्वीकार करेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि सुख से युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सांसारिक सुख संसाधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी लेकिन माता का सुख तथा स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव के कारण आप परिश्रम एवं पराक्रम से कर्म की

महत्ता को प्रमुखता देते हुए अपना भाग्योदय स्वयं करेंगी जिससे आपका परिवार खुशहाल रहेगा तथा दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता रहेगी। पारिवारिक जनों को यथोचित सुख सुविधाएं प्रदान करने में आप सफल रहेंगी।



**Shiv Kripa Jyotish Sansthan**

Lucknow

7007416695

shivkripajyotishsansthan@gmail.com

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



## ग्रह फल

### सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

### चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर, रूपवान, धनी ईमानदार, मधुरभाषी, सदाचारी, धीर, विद्वान, सुखी, सुन्दर वक्ता अधिक कन्या सन्तान वाला, ज्योतिष एवं कला प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में स्थित हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक व्याकुलता की उनको अनुभूति नहीं होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा वाहनादि सुख से वे युक्त रहेंगी तथा आपकी सुख समृद्धि एवं सुखसंसाधनों की प्राप्ति के लिए नित्य आपका आर्थिक तथा अन्य तरफ से सहयोग करती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति असीम निष्ठा एवं आदर का भाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार से सुख प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। इस प्रकार आप माता के लिए शुभ ही रहेंगी।

## मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सट्टे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

## बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

## गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्ब्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

## शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्,

भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

### शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

### राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

### केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।  
कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

## दशा विश्लेषण

**महादशा :- चन्द्र  
( 22/04/2024 - 17/05/2028 )**

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्ष की है। आपकी कुण्डली में यह 22/04/2024 को आरम्भ और 17/05/2028 को समाप्त होगी।

चन्द्र मानसिक शान्ति और सुख का कारक है इसलिए दस वर्षों की इस अवधि में आपको शांति, समृद्धि तथा मानसिक शांति की प्राप्ति होगी। इस अवधि में आप पूरी तरह सक्रिय रहेंगे, आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और धर्म-ईश्वर की ओर आपका झुकाव होगा।

**स्वास्थ्य :**

इस अवधि में आपको सुखी, शान्तिपूर्ण व उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। आप स्फूर्ति का अनुभव करेंगे और अपने कर्तव्यों और दैनिक गतिविधियों को पूरे उत्साह के साथ पूरा करेंगे।

किसी बड़े रोग अथवा किसी अप्रिय दुर्घटना की सम्भावना नहीं है।

**अर्थ और सम्पत्ति :**

इस अवधि में आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। गाड़ी और जमीन-जायदाद के क्रय की सम्भावना है। आपके बैंक बैलेन्स में पर्याप्त वृद्धि होगी और आप सुख-सुविधा के साधनों पर व्यय करेंगे।

**व्यवसाय :**

नये विषयों और कार्यों की खोज में आपकी रुचि होगी। फलस्वरूप आपकी रचनात्मकता में वृद्धि होगी जिसकी आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे। आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति मजबूत होगी और सम्मान में वृद्धि तथा पद में उन्नति होगी। आपको यश और ख्याति प्राप्त होगी और आपका सर समाज में ऊँचा रहेगा। आपकी कुण्डली में यात्रा का संकेत है जो आपकी भलाई के लिए होगी। आपको यात्रा के अनेक अवसर मिलेंगे।

**पारिवारिक जीवन :**

चन्द्र चतुर्थ भाव का कारक है जो परिवार, सम्पत्ति, माता तथा वाहन का द्योतक है। इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा। सगे-संबंधियों तथा माता के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। मामा या नाना के साथ भी आपका संबंध मधुर रहेगा और उनसे लाभ मिलेगा।

इस दशा के दौरान आपके मामा को भी लाभ होगा तथा संभव है कि आपके और आपके मामा के बीच परस्पर मधुर संबंध के कारण आप दोनों को लाभ होगा।

**शिक्षा/प्रशिक्षण :**

**Shiv Kripa Jyotish Sansthan**

Lucknow

7007416695

shivkripajyotishsansthan@gmail.com

नये विषयों के अध्ययन के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है। आप कोई पाठ्यक्रम आरम्भ कर सकते हैं अथवा अपने ज्ञान में सुधार के लिए अपनी शिक्षा जारी रख सकते हैं। आप अपने सभी कार्यों में सफल होंगे।



**Shiv Kripa Jyotish Sansthan**

Lucknow

7007416695

shivkripajyotishsansthan@gmail.com

**अंतर्दशा :- चन्द्र - केतु**  
**( 16/08/2025 - 17/03/2026 )**

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 22/04/2024 को प्रारंभ हुई ओर 17/05/2028 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 16/08/2025 को प्रारंभ होकर 17/03/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में अचानक कई परिवर्तन हो सकते हैं। जायदाद आदि में हानि हो सकती है; सुख-चैन में कमी संभव है। माता को भी कष्ट हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान जी की पूजा करें। प्रतिदिन हनुमान चालीसा का जाप करें। मंगलवार और शनिवार को व्रत करें। व्रत के दिन नमक न लें। इसके अतिरिक्त कुत्तों को भोजन दें और भूरा कुत्ता पालें।

**अंतर्दशा :- चन्द्र - शुक्र**  
**( 17/03/2026 - 16/11/2027 )**

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 22/04/2024 को प्रारंभ होकर 17/05/2028को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 17/03/2026 को प्रारंभ होकर 16/11/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि, धन और समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों पर आपका प्रभाव रहेगा। स्त्रियों से संबंधित उत्पाद में लाभ होगा। व्यापार में आप प्रवीण होंगे। उपचार करने की शक्ति भी प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। धर्मगुरुओं और संतों का सम्मान करेंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

**महादशा :- मंगल  
( 17/05/2028 - 17/05/2035 )**

मंगल की महादशा 17/05/2028 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 17/05/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल की तृतीय, चतुर्थ और वारहवें भाव पर दृष्टि है। मंगल इस दशा के दौरान अच्छा फल देगा। इसके पूर्व आपकी दस वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपकी यात्रा, कुछ व्यय, आध्यत्मिक उन्नति और सम्भवतः सफलता में कुछ बाधा हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति, समृद्धि और परिवार से सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें रोगों और कष्टों से लड़ने की शक्ति होगी। आपमें भरपूर-आत्मविश्वास तथा जीवनी-शक्ति होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आप सरदर्द, संक्रामक बीमारी तथा ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। नवम भाव में स्थित होने

के कारण मंगल आपको सम्पत्ति, समृद्धि, और सौभाग्य देगा तथा आपको पिता से लाभ मिलेगा। आपको सम्पत्ति, माता से लाभ मिल सकते हैं। किसी शुभ उद्देश्य के लिए व्यय भी हो सकता है। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ हो सकता है। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इंजीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र लोहा-इस्पात से सम्बद्ध व्यवसाय या पुलिस के कार्य का चयन कर सकते हैं। आपके लिए योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध व्यवसाय लाभदायक हो सकते हैं। तकनीकी कार्य आपके लिये उपयुक्त होगा। आप एक सफल सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी और आपकी आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय हो सकता है। आपको साझेदारी में सावधानी बरतनी चाहिए। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का विदेश से व्यापार हो सकता है।

**वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :**

मंगल की महादशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। इस दशा के दौरान आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा में खास तौर से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

**शिक्षा :**

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा में आप सफल होंगे और इस दशा में बहुत अच्छे करेंगे। गणित, विधि, इंजीनियरिंग, विज्ञान तथा तकनीकी के विषय आपके लिए बहुत उपयुक्त होंगे। आपमें आत्मविश्वास होगा और आप कार्य कुशलता से अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

**परिवार :**

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर होगा। आपको आपके बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके जीवनसाथी को सम्बन्धियों से लाभ मिलेगा और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपकी माता का आप पर बहुत प्रभाव होगा। आपको उनसे लाभ मिलेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा और सम्पत्ति, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी के व्यवसाय में धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को लाभ का अवसर मिलेगा, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

**अन्तर्दशा :**

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपको सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे राहु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सफल निवेश तथा सट्टे और कुछ परिवर्तन से लाभ होगा। शनि की अन्तर्दशा के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ होगा। आगे केतु की अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तथा शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और जीवन वृत्ति में उन्नति हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा के

फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्रा, व्यय तथा आध्यात्मिक उन्नति होगी।



**Shiv Kripa Jyotish Sansthan**

Lucknow

7007416695

shivkripajyotishsansthan@gmail.com

**अंतर्दशा :- मंगल - मंगल  
( 17/05/2028 - 13/10/2028 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 17/05/2028 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 17/05/2028 को प्रारंभ होकर 13/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपकी बहुत सी यात्राएं हो सकती हैं। सब सुख-सुविधाएं, धन उपलब्ध रहेंगे। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र से संबद्ध हो सकते हैं, बहुत से लोगों का भला करेंगे। विदेश यात्रा हो सकती है। आप साहसी होंगे। घरेलू सुख में मामूली कमी आ सकती है। अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। खर्च बढ़ सकते हैं। कुछ अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनके अपने भाइयों से संबंध मधुर रहेंगे। आपके पिता सम्मानित होंगे, सुखी रहेंगे और धन प्राप्त करेंगे। माता में विरोधियों को परास्त करने की शक्ति मौजूद रहेगी। भाई-बहनों को साझेदारी से लाभ होगा। उनका कारोबार चमकेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे सेवारत हैं तो निवेश से लाभ प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्थिति मजबूत होगी। परामर्शदाताओं और व्यापारियों को कुछ नुकसान हो सकता है या अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, पैरों में मामूली चोट लग सकती है। यात्रा के समय सावधानी आवश्यक है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु  
( 13/10/2028 - 31/10/2029 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 17/05/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 13/10/2028 को प्रारंभ होकर 31/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित घटनाएं आपको सुखियों में रखेंगी। समाजसेवा में मन लगेगा। परिश्रम और दक्षता द्वारा सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। माता से लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। निवास में परिवर्तन या सुधार संभव है। भूमि से खूब लाभ हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता खूब धन कमाएंगे। उनके जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं। आपकी माता को

साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है; उन्हें उपहार आदि से लाभ होगा, उनके खर्चे बढ़ेंगे, नेत्रों की देखभाल करनी चाहिए।

आपकी संतान शारीरिक कार्य जैसे खेलकूद आदि में उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कठिन परिश्रम करने से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारियों को अचल संपत्ति में निवेश करने से भविष्य में लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घुटनों या पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरवजी के रूप में पूजा करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु  
( 31/10/2029 - 07/10/2030 )**

आपकी मंगल की महादशा 17/05/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 31/10/2029 को प्रारंभ होकर 07/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और धनी होंगे। धन का संचय होगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। कोई पुरस्कार मिल सकता है। प्रभावशाली लोगों से मित्रता हो सकती है, उनसे लाभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। घर में कोई उत्सव हो सकता है। आयु में बड़े लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। विवाह हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा, कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी। किसी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी; शत्रु परास्त होंगे। आपके पिता की समस्याएं सुलझेंगी; उच्च पद और शांति की प्राप्ति होगी। माता को अचानक धन या अचल संपत्ति मिल सकते हैं। भाई-बहन धनी बनेंगे, यात्राएं होंगी, उच्च पद मिलेगा, समाज में उन्नति होगी।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, कार्यों में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मगर कान और पैरों की व्याधियों से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि  
( 07/10/2030 - 16/11/2031 )**

आपके लिए मंगल की महादशा 17/05/2028 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 07/10/2030 को प्रारंभ होकर 16/11/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपको पुत्रों से धन और खुशी की प्राप्ति होगी। आपका मन अध्यात्म और दान-धर्म में लगेगा। ज्योतिष का अध्ययन कर सकते हैं। धन, सम्मान, और सफलता का संकेत है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आय में वृद्धि होगी। आपकी कार्यक्षमता की तारीफ होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। ठेकेदारी, नौकरी आदि से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी उत्साही रहेंगे। आपके पिता के कार्य पूर्ण होंगे। माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। भाई-बहनों की साख में वृद्धि होगी, विवाह हो सकता है, यात्रा और अनुबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं।

वातजन्य रोग, गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरवजी के रूप में शिवजी की आराधना करें।